रांची, 4 सितंबर 2017 दैनिक जागरण

# ठप हो सकता है दूध उत्पादन

## पानी की किल्लत : छह माह पहले बने संप में आई लीकेज की समस्या, मटमैला हुआ पानी

### मेधा प्लांट

जागरण संवाददाता, रांची : एक बार फिर झारखंड राज्य मिल्क फेडरेशन के मेधा डेयरी प्लांट के समक्ष पानी की समस्या उत्पन्न हो गई है। ऐसे में प्लांट में कभी भी दूध उत्पादन ठप हो सकता है। प्लांट को पानी की कमी के कारण मिल्क प्रोसेसिंग का कार्य करने में परेशानी हो रही है। वर्तमान में पानी की मौजूदा समस्या के कारण मेधा डेयरी का उत्पाद बाजार में सहीं समय पर नहीं उतर पा रहा है।

पेयजल स्वच्छता विभाग द्वारा निर्मित संप में लीकेज होने से गंदा पानी प्लांट को मिल रहा है। इसका निर्माण फरवरी 2017 में हुआ था। एक लाख लीटर क्षमता वाले संप का पानी मटमैला हो गया है। जब इसकी शिकायत प्लांट ने पेयजल स्वच्छता विभाग से की, तो कोई भी सुनवाई नहीं हो रही है। मामले को नजरअंदाज कर दिया जा रहा है और संप को दुरुस्त करने के लिए फिर से राशि की मांग की जा रही है। इधर, पानी की समस्या के कारण प्लांट में कभी भी दूध का उत्पादन ठप हो सकता है।

पानी के लिए बाहर से जोड़ी गई पाइपलाइन • जागरण

खराब सप्लाई पानी • जागरण

### रोजाना एक लाख लीटर पानी की जरूरत

प्लांट में दूध की पैकेजिंग और मिल्क प्रोसेसिंग के लिए रोजाना एक लाख लीटर पानी की आवश्यकता पड़ती है। लेकिन, संप की व्यवस्था फेल होने से अब प्लांट के समक्ष पानी स्टॉक करने की समस्या उत्पन्न हो गई है। दरअसल प्लांट की सभी बोरिंग पहले से ही फेल हैं। एक मात्र सप्लाई वाटर से प्लांट का सारा कार्य संपन्न होता है। पानी की समस्या न रहे, इसलिए प्लांट में संप की व्यवस्था कर पहले से ही एक लाख लीटर पानी को संग्रहित कर रखा जाता है। संप में लीकेज होने से कंपनी को मजबूरन चार इंच के पाइप में एक इंज पाइप का कनेक्शन करना पड़ा, जो वैकल्पिक व्यवस्था है। इससे कंपनी की समस्या दूर नहीं होनेवाली है।

### बिना पानी के संभव नहीं उत्पादन

मेधा डेयरी प्लांट का सारा यूनिट पानी पर ही निर्भर है। अगर पानी नहीं मिला, तो काम ठप हो जाएगा। पानी की आवश्यकता प्लांट को दूध के पाइप लाइन की क्लीनिंग, ब्वॉयलर, मिल्क टैंकर, कैन की धुलाई, पनीर उत्पाद के निर्माण सहित अन्य कंटेनरों की साफ-सफाई में होती है।

देखिए मेरे पास इसकी शिकायत नहीं मिली है। हो सकता है कंपनी ने जेई से संपर्क साधा हो। विभाग इस मामले को लेकर गंभीर हैं और मैं खुद कल जेई को प्लांट भेजकर स्थल का निरीक्षण कराऊंगा।
**सुनील कुमार**, कार्यपालक अभियंता, बूटी प्रमंडल, पेयजल एवं स्वच्छता विभाग

संप खराब होने से पानी की समस्या उत्पन्न हो गई। पानी की किल्लत होने से दूध उत्पादन में परेशानी हो रही है। पेयजल स्वच्छता विभाग से संपर्क साधा गया है। लेकिन सहयोग नहीं मिल रहा है। एक सप्ताह से स्थिति खराब है।
**बीएस खन्ना**, एमडी, झारखंड राज्य मिल्क फेडरेशन

## दरहाटांड़ बन गया दूधटांड़

# हर दरवाजे पर बंधी गाय, बह रही दूध की धारा

### इटकी के सुदूर गांव में चार साल में 15 से 1500 लीटर हुआ प्रोडक्शन, झारखंड मिल्क फेडरेशन मेधा गांवों में बिखेर रहा है श्वेत क्रांति की धुन

कौशल आनंद | रांची

राजधानी से तकरीबन 22 किमी दूर इटकी का दरहाटांड़ गांव। दरहाटांड़ का नागपुरी भाषा में शाब्दिक अर्थ है- भूतों का बसेरा। नाम से ही स्पष्ट है कि यह गांव रूढ़िवादी व्यवस्था में विश्वास करता है। लेकिन यह स्थिति चार साल पहले तक थी। आज यह श्वेत क्रांति की कहानी कह रहा है। दरहाटांड़ दूधटांड़ बन चुका है।

गांव के लगभग हर घर के दरवाजे पर गाय बंधी हैं। हर तरफ दूध की धारा बह रही है। पहले लोग भूतों के भय से इस गांव में जाना नहीं चाहते थे, आज यहां झारखंड स्टेट मिल्क फेडरेशन का बड़ा टैंकर रोज दूध कलेक्ट करने आता है। हर दिन 1500 से 1600 लीटर दूध लेकर प्रोसेसिंग के लिए होटवार प्लांट जाता है, जिसे राज्य के अलग-अलग हिस्से में सप्लाई किया जाता है। आसपास के गांवों के लोग ऑटो, बाइक समेत अन्य वाहनों से दूध लेकर यहां पहुंचते हैं और यहां खोले गए मिल्क चिलिंग सेंटर को सप्लाई देते हैं। इस दुग्ध क्रांति ने गांव की अर्थव्यवस्था ही बदल दी है।

मेधा के एमडी बीएस खन्ना के प्रयास से एचडीएफसी बैंक ने भी इस गांव में अपना बिजनेस सेंटर खोल दिया है। इससे फायदा यह हो रहा है कि दूध का पैसा सीधे किसानों के बैंक खाते में ट्रांसफर हो जाते हैं। इस दूधटांड़ ने आसपास के दर्जनों गांवों को स्वावलंबन और घर बैठे आमदनी की राह दिखा दी है। आज राज्य के कोने-कोने से किसान यहां सक्सेस स्टोरी देखने आ रहे हैं।

### अशोक महतो ने खुलवाया था टेस्टिंग सेंटर

विकास के इस बदलाव के सूत्रधार हैं दरहाटाड़ के 35 वर्षीय अशोक महतो। 2012 में पूरे गांव में सिर्फ अशोक के पास ही दो गाय थीं। शुरुआत में वे 15 लीटर दूध लेकर यहां से आठ किमी दूर हरही गांव में मेधा के मिल्क कलेक्शन सेंटर जाते थे। उनके अथक प्रयास के बाद मेधा के एमडी बीएस खन्ना ने दरहाटाड़ में मिल्क टेस्टिंग सेंटर खुलवाया। सेंटर खुलते ही गांव में श्वेत क्रांति का बीजारोपण हो गया। देखते ही देखते हर घर के दरवाजे पर गायें नजर आने लगीं। जल्द ही मिल्क कलेक्शन सेंटर और बाद में बल्क मिल्क चिलिंग (बीएमसी) सेंटर खुल गए। आज हर दिन 1500 से 1600 लीटर दूध का उत्पादन हो रहा है।

**52** बीएमसी खोल चुका है झारखंड मिल्क फेडरेशन

**300** मिल्क टेस्टिंग सेंटर में हो रहा है दूध का कलेक्शन

**1600** गांवों से मेधा को हर दिन मिल रहा है दूध

**15500** से अधिक किसान लगे हैं दुग्ध उत्पादन में

**90000** लीटर दूध राज्यभर से होता है हर दिन कलेक्शन

400000 लीटर दूध अब भी पड़ोसी राज्यों से आता है

### गांव में प्रतिस्पर्द्धा

झारखंड मिल्क फेडरेशन के सहयोग से पूरे गांव में दूध उत्पादन को लेकर एक प्रतिस्पर्द्धा बन गई है। हम दूध उत्पादन में दरहाटाड़ को आदर्श ग्राम बनाना चाहते हैं, जो केस स्टडी बन जाए।
-अशोक महतो, किसान।

### दूसरे गांव भी ला रहे दूध

हमारा गांव पहले भूतों का गांव माना जाता था। मेधा का सेंटर खुलने के कारण अब यहां आसपास के गांवों से लोग दूध बेचने आ रहे हैं। दूध उत्पादन के साथ ही इस गांव की सूरत बदल गई है।
-देवीचरण महतो, किसान।

### झारखंड के गांवों में दूध उत्पादन की है काफी संभावनाएं

झारखंड के गांवों में दूध उत्पादन को लेकर काफी संभावनाएं हैं। हम गुजरात के उदाहरण को पीछे छोड़ सकते हैं। इसके लिए झारखंड स्टेट मिल्क फेडरेशन और हमारे किसान तैयार हैं। सरकार की ओर से और बेहतर सपोर्ट मिले तो झारखंड दूध के मामले में आत्मनिर्भर हो जाएगा। -बीएस खन्ना, एमडी, मेधा।